राम बुझावन सिंह

जन्म तिथि : 1 अप्रैल 1920

जन्म स्थान : सतपरसा, मसौढ़ी, पटना

निवास : बाकरगंज (बजाजा), पटना-800004

सिच्छा : एम० ए० (हिन्दी)

पदस्थापित :

1. बी.एन. कॉलेज, पटना में हिन्दी के प्राध्यापक पद से सेवा-निवृत
2. बिहार मगही अकादमी, पटना के अध्यक्ष पद पर रहलन
3. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना के निदेशक पद पर आसीन

सम्पादित ग्रंथ :

1. निराला : जीवन और साहित्य
2. रेणु : कृतित्व और श्रद्धांजलि
3. गद्य विहार

पत्रिका सम्पादन :

1. 'नवशक्ति' में सह सम्पादक
2. 'दैनिक राष्ट्रवाणी' में सह सम्पादक

ललित निबंध साहित्य के एगो विधा हे। मगही भासा में भी ललित निबंध के चलन हे। एकर नमूना के रूप में इहाँ ललित निबंध देल जाइत हे, ताकि ई विधा से छात्र लोग परिचित हो सकथ। ई निबंध में बतावल गेल हे कि मगह में गेला पर तीन किसिम के टेंढ़ से पाला पड़त। ऊ तीनों टेंढ़िया के विस्तार से जानकारी देके ई बतावे के कोसिस कइल गेल हे कि मगह के टेंढ़ापन एकर दोस न होके खूबी हे।

मग्गह के तीन टेंढ़

मग्गह के बारे में एगो कहाउत प्रचलित हे कि मग्गह में तीन टेंढ़ होवऽ हे–राह टेंढ़, अदमी टेंढ़ आउ बोली टेंढ़। ऊपर से देखे में लगऽ हे कि ई कहाउत मग्गह ला अपमानजनक हे, काहे कि कोई के टेंढ़ कह देवल असिस्ट नियर बुझा हे। पर सच पूछीं तऽ कहाउत अइसहीं न बने, खूब सोच-समझ के बनऽ हे, जेकरा में बहुत कुछ सच्चाई रहऽ हे। ई कहाउत एकर अपवाद न हे।

सबसे पहिले 'राह टेंढ़' के बात लीं। कहीं के भी राह के घना संबंध उहाँ के धरती, पानी, यानी भूगोल के बनावट से रहऽ हे। जइसन जहाँ के हवा-पानी आउ मट्टी रहत, ओइसने उहाँ के सबकुछ बन जायत—राह-बाट, लोग-बाग आउ सभ्यता-संस्कृति। एकरे जयशंकर प्रसाद जी अप्पन नाटक 'विशाख' के परिचय में कहलन हे—'हमें हमारी गिरी दशा से उठाने के लिए हमारे जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है, उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं, इसमें मुझे पूर्ण सन्देह है।'

ई कथन में 'हमारे जलवायु के अनुकूल हमारी सभ्यता' पर ध्यान देवे के हे। हम्मर सभ्यता हम्मर देश के जलवायु के अनुकूल ही बनत, तऽ राह-बाट अप्पन मट्टी-पानी से बचके कइसे रहत ?

ई मग्गह के भौगोलिक तथ्य हे कि एकर मट्टी धूसर, बलुआही आउ मरल नऽ हे, जे पानी के तुरते सोख लेहे। बहुत जगह के मट्टी बलुआही पावल जाहे जे बरखा के पानी के तुरते सोख लेहे। बरखा छुटला पर पाँव झाड़ दीं, सब धूल झड़ जायत। चप्पल-जूता पहिन के तुरत चले लगीं। तनिक्को मट्टी न लगत। उहाँ के लोग अप्पन मट्टी के ई खूबी मानऽ हथ कि बरसात में भी उहाँ जूता-चप्पल चलऽ हे। उनकर ई खूबी उनका मुबारक ! खूब जूता-चप्पल उहाँ चले, एकरा में हमरा का एतराज हे ?

पर मग्गह के मट्टी के ई रेवाज न हे। इहाँ के मट्टी जादेतर काला, केवाल मट्टी हे, जेकर खूबी हे कि पानी नऽ पड़त, तऽ सूख के ऊ अइसन कड़ा हो जायत कि ओकरा आगे पत्थर भी मात खा जायत। ठेंस लगला पर ओकर कड़ाई बुझायत। पर अगर थोड़ा पानी के संसर्ग ओकरा भेंट जायत, तऽ ऊ एतना लसगर हो जायत कि अपने के गोड़ न छोड़त। ई धूरी नऽ हे, जेकरा झाड़ के अपने चल देम। ई हम्मर मट्टी के सनेह हे, जे गीला होला पर अइसन पकड़ लेहे कि छोड़ावल

मोस्किल होवऽ हे! सनेह अइसने बरियार होवऽ हे। सनेह के आगे केकर जोर चलल हे भला ?

एही से जब मग्गह के धरती बरखा में डूब जाहे, तऽ बड़ा घूम-घुमाव के राह बनऽ हे। लगत कि पावे भर तो जाय ला हे। पर जाय लगबऽ तऽ राह लम्बा हो जायत। कवि के बात इयाद आ जाहे—'चलता-चलता जुग गया, पाव कोस पर गाँव।' चलनिहार कवि के मगहे से पाला पड़ल होयत। लम्बा राह टेंढ़ा होइए जायत। ओहू में सनेह से भींगल, चिक्कन, लथपथ।

जे गुन मगही राह के, ओही मगहियन अदमी के भी हे। इहाँ भी धरती-मट्टी के ही असर काम करऽ हे। पहिले अदमी के माने अदमी के देह से लीं। मग्गह के मट्टी में खेसारी खूब उपजऽ हे, जेकर उपयोग जानवर से लेके अदमी तक खूब करऽ हथ। जहिया से खेसारी में टूसा निकलऽ हे तहिए से ओकर साग चले लगऽ हे। देहात तो देहात, सहर के लोग के भी ओकरा ला परान छछनइत रहऽ हे। अप्पन देहाती कुल-कुटुम्ब के पहिलहीं सनेस भेज देतन कि गंगा नेहाय अइहऽ तऽ खेसारी के साग लावे ला मत भूलिहऽ! खेसारी के साग में एतना सवाद हे। मगर ओकर दाल ? ओकरा बारे में डाक्टर लोग कहऽ हथ कि बहुत दिन तक लगातार ओकर दाल खाय से पाँव में गठिया हो जाय के डर रहऽ हे। ई बात में सच्चाई हो सकऽ हे। खेसारी के दाल सबसे सस्ता होवऽ हे। गरीब-गुरबा ओकरा खूब खा हथ। खेतिहर मजदूर के भी खेसारिये मजूरी में देवल जाहे। ई से अक्सर जन-मजूर के पाँव गठिया पकड़ के लाँगड़ हो जाय, टेंढ़ हो जाय, तऽ कउन अचरज हो गेल ?

अब टेंढ़ के मतलब अदमी के देह से नऽ, सोभाव से लेल जाय। इहाँ फिर हम मग्गह के धरती-मट्टी के इयाद दिलाएम। ओकरा अगर सनेह से भिंगाईं, तऽ ऊ एतना चिकना हो जायत कि अपने फिसल जाएम, देह से आउ मन से भी। पर अगर ओकरा से सुखले बतियाएम, बिना सनेह दरसयले, तऽ ऊ पत्थर नियर कठोर हो जायत। एकरे टेंढ़ भी कह सकऽ ही। पर सच पूछीं तऽ एकरे अदमी के स्वाभिमान भी कहल जाहे, जे मगहियन में कूट-कूट के भरल हे। एही ओकर खूबी हे।

इहाँ हम फिर पोथी-पुरान के इयाद दिलाएम। धनुही-भंग के बाद जब परसुराम फरसा तानले जनकपुर पहुँचलन, तऽ सब कोई तो सटक सीताराम हो गेलन, पर लछुमन के त्योरी चढ़ गेल। ऊ उनकर नहला पर दहला कसे लगलन–'अइसन-अइसन तीर-कमान आउ फरसा हम ढेर देखली हे।' परसुराम के जरइत आग में घीउ पड़ गेल। ऊ फरसा के धार पर अँगुरी फेरे लगलन।

एही बीच राम आके उनका सांत कयलन–'महाराज, अगर अपने खाली मुनि वेस में अइती, तऽ लछुमन अपने के पाँव पर गिर जाइत हल। पर अपने के तीर, कमान आउ फरसा देख के ओकर छत्रियाँव भड़क उठल। एकरा में ओकर दोस न हे।'

अब इहाँ बूझीं कि लछुमन में ई तेवर कहाँ से आयल। हम्मर बात के बकवास न मानल जाय। हम निवेदन करम कि लछुमन में ई तेवर उनकर ननिहाल के धरती-मट्टी से आयल हल, जे मग्गह के गया छेत्र में हल। आज भी उनकर ननिहाल के गाँव रामपुर चाईं के नाम से मौजूद हे, जेकरे पास आज भी मसहूर सूर्य-मन्दिर देकुड़ (देवकुण्ड) हे। कहल जाहे कि राम जब पिता के पिण्डदान ला गया जाइत हलन, तऽ एक रात उहें ननिहाल में ठहर के बिसराम कयलन हल, जेकर इयाद में आज भी ऊ गाँव रामपुर कहला रहल हे।

तऽ जइसे लछुमन के स्वाभिमान कोई के ठोकर बरदास्त न कयलक, ओइसहीं मगहियन भी कड़ाई के साथ पेस आवेवला के साथे कड़ा बन जा हथ। एही से लोग कह दे हथ कि मग्गह के अदमी टेंढ़ होवऽ हे। लोग हमरा टेंढ़ कहथ इया सोझ, हम तो अप्पन धरती-मिट्टी से लचार ही। हँ, जरा सनेह देखला के तो देखीं कि हम केतना नरम हो जाही। केवाले मट्टी से तो आखिर हम्मर तन-मन बनल हे।

गोसाईं बाबा भी टेंढ़ से काफी घबरा हलन– 'टेंढ़ जानि संका सब काहू'। लगऽ हे कि उनका कोई मगहिया से पाला पड़ गेल होयत। एही से ओहू मग्गह के गरियावे में बाज न अयलन–'गया मग्गह महँ तीरथ जैसे।' हमरा से कोई के संका, डर-भय न होय, एही से का हम पूरनमासी के चाँद बन जाईं, जेकरा हर कोई राहू बनके दबोच देवे ? हम वक्र चन्द्रमा रहम से कबूल, पर कोई राहू के ग्रास नऽ बनम। बनम तऽ 'नगद दमादै अभिमानी के'।

रह गेल 'बोली टेंढ़' के बात। 'निज कवित्त केहि लागे न नीका' न्याय से सोचीं तऽ बात अपने-आप खुलासा हो जाहे। पर अपना से तटस्थ होके जरा सोचऽ ही तऽ ई मान लेवे पड़ऽ हे कि मगहियन के जबान पर अड़ोस-पड़ोस के बोली जल्दी चढ़ जाहे। पर हम्मर पड़ोसी के जबान पर मगही बहुत कम चढ़ऽ हे। अप्पन-अप्पन रीत-रेवाज, संस्कार हे। एकरा अलावे हमरा तो बुझा हे कि 'निज भासा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल' के मरम ऊ हमरा से पहिले आउ जादे समझ गेलन हे, ओकर सवाद खूब बूझ गेलन हे। आज दुनिया के दौड़ में आगे निकल जाय ला ई बहुत कारगर नुस्खा हे।

भासा-विज्ञान के नजर से देखला पर सचमुच अइसन परतीत हो हे कि मगही बोली असानी से नऽ साधल जा सकऽ हे। 'तीन कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी' जेतना मगह में पावल जाहे, ओतना सायदे कहीं दूसर जगह। पटना, गया, नालन्दा, औरंगाबाद, पलामू, हजारीबाग, राँची के मगही बोली में ई फरक साफ बुझा जायत। एही से मगहियन ला भी मगही बोली सोझ न बुझाय, गैर-मगहियन ला ई बोली टेंढ़ लगे तो कउन अचरज ? खूब ठेकाने से मगही बोली जबान पर चढ़ जाय, एकरा ला कुछ साधना करे के जरूरत हे। गैर-मगही भाई एकरा टेंढ़ कहथ इया सोझ, पर हम तो एही कहम कि 'आती है मगही जबां आते-आते'।

जे ई मगही के मरम समझ जयतन, ऊ बुद्ध बन जयतन। सिद्धार्थ के ढेर संगी-साथी अपना-अपना नियर उनका प्रबोध के हार गेलन, पर पार न पयलन। आखिर निरंजना के कगार पर से एगो बोल फूटल–'बीना के तार नियर मन के साधऽ; न जादे तानऽ न जादे ढीला छोड़ऽ'। के न जाने कि सिद्धार्थ ई मरम-बोल के साधलन, तऽ बुद्ध बन गेलन। आज भी जे मगही के मरम बूझ लेतन, ऊ प्रबुद्ध बन जयतन। न बूझेवला के तो ई टेंढ़ा बुझयबे करत।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) राह टेंढ़ के मतलब का हे ? समझावऽ।

(ख) नीचे लिखल कथन केकर हे, सही पर ☑ लगावऽ :—

'टेंढ़ जानि संका सब काहू।'

(i) कबीरदास

(ii) रसखान

(iii) तुलसीदास

(iv) रामसनेही दास

(ग) 'मगह के अदमी टेंढ़ होवऽ हे' ई कथन के मतलब समझावऽ।

(घ) 'बोली टेंढ़' के समझा के बतावऽ।

(ङ) 'जे ई मगही के मरम समझ जयतन, ऊ बुद्ध बन जयतन।' एकर आसय समझावऽ।

लिखित :

1. लेखक राम बुझावन सिंह के परिचय पाँच वाक्य में दऽ ।
2. पाठ में कउन-कउन तीन गो टेंढ़ के बखान भेल हे ?
3. मग्गह के मट्टी कइसन हे आउ कइसन नऽ हे ?
4. मग्गह के अदमी के गुन के तुलना केकरा से कइल गेल हे ? दुन्नो में कउन-कउन समानता हे ?
5. खेसारी के साग आउ खेसारी के दाल के तासीर में का फरक होवऽ हे ?
6. लछुमन के बात करे के ढंग आउ तेवर कहाँ से मिलल ?
7. मगही बोलल जायवला पाँच गो प्रमुख जगह के नाम बतावऽ।
8. निरंजना के कगार पर कउन बोल फूटल जेकरा से सिद्धार्थ बुद्ध बन गेलन ?
9. लेखक पूरनमासी के चाँद बने के खिलाफ काहे हथ ? समझा के लिखऽ।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सब्द-युग्म के अर्थ बतावऽ :—

   हवा-पानी, राह-बाट, सभ्यता-संस्कृति, लोग-बाग,
   घूम-घुमाव, कुल-कुटुम्ब, धरती-मट्टी, संगी-साथी,
   पोथी-पुरान, अड़ोस-पड़ोस, रीत-रेवाज

2. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ बतावइत वाक्य में प्रयोग करऽ :—
   नहला पर दहला, आग में घीउ, जबान पर चढ़ना
3. 'महाराज' सब्द 'राज' में 'महा' उपसर्ग लगे से बनल हे। अइसने पाँच गो उपसर्ग से बनल सब्द पाठ से चुन के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. 'मग्गह के संस्कृति' पर एगो संक्षेप में लेख लिखऽ।
2. 'ई निबंध मग्गह के गरिमा के खिलाफ हे' एकरा पर वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन 'बुद्ध जयन्ती' के अवसर पर करऽ।

सब्दार्थ :

धूसर	—	धूरी से भरल
बलुआही	—	बालू मिलल
सनेह	—	प्रेम
बरियार	—	मजबूत
छत्रियाँव	—	छत्री के गुन
बकवास	—	बिना मतलब के बात
कवित्त	—	कविता
उन्नति	—	उत्थान
बानी	—	बोली (भासा)

●●●